नाविक

ए

इस्लाम

लेखक

नुसरत आलम शेख (जाफ़र)

पेशे लफ्ज़

अलहम्दुलिल्लाह खुदा हमारी कोशिशो को रंग लाया की आज मैं इस्लाम के खेवन हारो के बारे में कुछ चन्द अलफ़ाज़ लिखने के काबिल हुआ लेकिन इन चन्द अल्फ़ाज़ों को लिखने में या यूँ कहो की कड़ियों को मिलाने में बड़ी मशक्कत करनी पड़ी क्युकी हमारा ज़ेहन हमेशा लिखने के पहले हर फिरके को ध्यान में रखता है की कहीं हमारी चन्द लाइनो के ज़रिए किसी भी फिरके या मज़हब को ठेस ना पहुंचे जबकि सबही यह जानते हैं की मज़हब-ए-इस्लाम के हकीकतन कौन खेवैया है और कौन वह लोग है जो कश्ती-ए-इस्लाम को डुबोना चाहते थे.

खैर अल्लाह का शुक्र है आज हमारी यह किताब जिसका मकसद सिर्फ तमाम इंसानों को एक पैगाम देने के लिए है जो नबी-ए-करीम (सलल्लाहु अलैहे वसल्लम) के बताए हुए रास्ते पर है और नबी-ए-करीम (सलल्लाहु अलैहे वसल्लम) के पर्दा-ए-गैब में जाने के बाद इस्लाम की इस नाव को कितनी मशक्कत और मुश्किलों के बाद एक किनारा मिला आज हम सब खुश हैं की हमे खानदान-ए-नबी के ज़रिए एक सही और मुकम्मल मज़हब मिला जिसपर हम इतराते है. लेकिन मज़हब की यह शक्ल बनाने में

नबी-ए-करीम (सलल्लाहु अलैहे वसल्लम) का पूरा खानदान इसको सवारने और बनाने में शहीद हो गया हमे इनकी शहादत को नहीं भूलना चाहिए वर्ना सब बेकार हो जाएगा.....सब बेकार हो जाएगा..... अल्लाह हमे ऐसे गुनाह से महफूज़ रखे आमीन.

यह किताब का जितना भी अज्र और सबाव मिले वह सब हमारे खानदान के जितने भी मरहूम और मर्हुमात हैं उन सबको को पहुंचे खुसूसन हमारी वालिदा माजिद शाहजहां बेगम को पहुंचे.

आपका

नुसरत आलम शेख (जाफ़र)

२१ रमज़ान ४० हिजरी में **हज़रत अली** को सुपुर्द-ए-ख़ाक करने के बाद कुफे में यह फैसला किया गया की हम कुफे वाले किसपर बैत करें और हमारा खलीफा कौन हो तो सबसे पहले अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने हज़रत अली के बड़े बेटे हसन बिन अली के नाम का ऐलान किया. इस बिनाह पे सबसे पहले साद बिन आबिद अंसारी ने बैत की और इसके बाद तक़रीबन ४०,००० लोगो ने बैत करके हज़रत हसन को अपना **खलीफा** बनाया इस वक़्त उनकी **उम्र ३७ बरस ६ दिन** की थी और आपकी **पैदाइश १५ रमज़ान ३ हिजरी बरोज़ जुमा मदीने मुनौवरा** में हुई थी आपकी माँ का नाम फातिमा बीनते मुहम्मद था आपकी पैदाइश के वक़्त रसूल-ए-करीम (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) ने आपका नाम हज़रत मूसा के वली हारून के बेटे शब्बर के नाम पे **शब्बर** रखा लेकिन बाद में जब अल्लाह पाक ने जिब्राइल के ज़रिए सफ़ेद रूमाल रसूल (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) को भेजा जिसपे **हसन** लिखा था, तब बाद में आपका नाम हसन रखा इसके पहले किसी का नाम हसन नहीं था और यह लोहे महफूज़ पर दर्ज है। आपका लकब **अबू मुहम्मद अमीन, तय्यब तकि** वगैरह थे. इसी कुफे में अशस बिन कैस, हारिस बिन अलहारिस, अमरु बिन कैस, साद बिन अब्दुल्लाह यह ऐसी शक्शियत थी जिन्होंने आप पर बैत नहीं की क्युकी यह सब अपने को इस्लामी जगत का खलीफा देखना चाहते थे, उसी बात का फायदा उठा कर अमीरे शाम हज़रत माविया ने खुतूत के ज़रिए इन लोगो को अपनी तरफ मिला लिया और कहा की हमें किसी भी तरह हसन का क़त्ल करना है और पूरी इस्लामी हुकूमत पे कब्ज़ा करना है।

इधर हज़रत अली के शहीद होने के बाद जिनकी तलवार की शोहरत और हनक जो पूरे अरब मुल्क में छाई हुई थी ख़त्म हो गई और जगह जगह बगावत का बिगुल बजना शुरू हो गया। यह वक़्त

हज़रत हसन के लिए काफी मुश्किल था। इसी बीच शहरे कुफा में एक कसाई के घर से कबिले बनी कसीर का एक शख्स और शहरे बसरा में कबिले बनी कैस का एक शख्स जासूसी के इलज़ाम में गिरफ्तार हुआ और उसने कबूला की अमीरि शाम ने उनको बगावत के सिलसिले में भेजा था, उस वक़्त बसरा के गवर्नर अब्दुल्लाह बिन अब्बास थे। चारो तरफ से बगावत और नफरत जैसी बुराइयां शुरू हो गई इसी बीच हज़रत हसन ने हज़रत माविया को एक ख़त लिखा जिसका मौज़ू इस तरहा था।

"अमीरि शाम माविया तुमने हमारी खिलाफत में नफरत पैदा करने के लिए तमाम जासूस भेजे और कुफे के कुछ लोगो को अपनी लडकियों से शादी और २-२ लाख दिरहम का लालच देकर हमारे निजाम में फितना पैदा करने की कोशिश की है. इससे यह साबित होता है की तुम हामारे वालिद के साथ साथ हमारी खिलाफत के भी कायल नहीं हो, मैं कोई जंग नहीं चाहता हूं, और जंगे जमाल और जंगे नेहरवान की तरहा फिर कोई खून खरब हो"।

इसके बाद खुतूत का सिलसिला बराबर चलता रहा बावजूद इसके हज़रत माविया ने अमरू आस के कहने पर ६०,००० का फौजी लश्कर बग़दाद शहर से ३५ मील दूर मिस्सम नाम की जगह पर तैनात कर दिया। जब यह खबर कुफे पहुंची तो हज़रत हसन ने अपने असहाबो को बुलाकर एक लश्कर जमा करने का हुकुम दिया, लेकिन मुसलसल ५ साल तक जंगो में उलझने के बाद असहाब आना कानी करने लगे, लेकिन फिर भी हज़रत हसन ने कोशिशे जारी रखी और ३२,००० का लश्कर लेकर स्वात नाम की जगह पर खेमा ज़न हो गए और १२,००० का लश्कर कैस बिन साद की सिपेसलारी में मिस्सम की तरफ रवाना कर दिया और हुक्म दिया की फ़ौज को आगे बढ़ने से रोको मैं बाद में बाकी फ़ौज के साथ पीछे से आता हूं. हज़रत हसन की फ़ौज में ४ किस्म की फौजे थी.

१) हज़रत अली के वफादार और दोस्त।

२) वह खारजी जो हर सूरत में माविया से जंग करना चाहते थे और माविया को मारना चाहते थे।

३) वह लोग जो माल-ए-गनीमत की लालच में जंग करते थे उनको हक़ और बातिल का कोई मतलब नहीं था।

४) ऐसे कबीले जो गरीब और नीच समझे जाते थे, और वह अपने को बुलंद करने के लिए किसी भी तरीके से जंग करना चाहते थे।

कैस बिन साद को भेजने से पहले ही हज़रत हसन ने एक ख़ुत्बा दिया जिसका मौजू इस तरहा था,

" ऐ कुफे वालो मैं तुम्हारी बहादुरी और वफादारी को अच्छी तरहा समझता हूं की अगर तुम जंग करोगे तो यह अल्लाह की मरज़ी से होगी और तुम फ़तेह होगे लेकिन मैं जंग से बेहतर सुलाह को समझता हूं और जीत से बेहतर जिंदा रहने को समझता हूं "।

इस ख़ुत्बा का असर यह हुआ फौजों ने समझा के हज़रत हसन जंग से डर रहे हैं और सुलाह करना चाहते हैं।

इधर अमीरि शाम के कुछ जासूस कैस बिन साद की फ़ौज में शरीक हो गए और कुछ हज़रत हसन की फ़ौज में शरीक हो गए इन जासूसों ने यह अफवाह फैलाई के हज़रत हसन ने हज़रत माविया

से सुलाह कर ली है, की वह जंग नहीं चाहते हैं. इस बात को लेकर खारजियो ने बगावत कर दी और तमाम लोग हज़रत हसन के खेमे में घुस गए उनका अमामा उनका मुसल्ला खीच लिया लेकिन आप अपने जाँनिसारों की बदौलत बच गए और मदियन की तरफ रवाना हो गए।

मदियन के गवर्नर सईद बिन अब्दुल्लाह जो की शियान-ए-अली (यह एक तंजीम थी जो मदीने में रहकर हज़रत हसन ने बनाई थी, जिसकी पूरी देख रेख वह खुद करते थे, यह वाकिया हज़रत हसन की खिलाफत होने के दस्तबरदार होने के बाद का है) की नुमाइंदिगी कर रहे थे मदियन आ जाने के बावजूद खारजियो ने हज़रत हसन का पीछा नहीं छोड़ा और मदियन के रास्ते में ही हमला कर दिया, वार इतना जबरदस्त था, रान को काटता हुआ हड्डी को तोड़ता हुआ निकल गया यह वार ज़रा बिन कैसर ने किया था फिलहाल आप अपनी जान बचा कर मदियन पहुँच गए और तकरीबन ३ महीने तक अपना इलाज कराया और जब ज़ख्म भर गया तो आपने एक लश्कर जमा करने की मुहीम चलाई और तक़रीबन ४०००० का लश्कर जमा कर लिया। इसी बीच अमीरे शाम ने २०००० का लश्कर अब्दुल्लाह बिन आमीर की निघ्रानी में मदियन की तरफ भेज दिया। इधर मदियन में यह अफवाह उडी की इस फ़ौज के पीछे अमीरे शाम खुद १००००० का लश्कर लेकर आ रहे हैं इसका असर यह हुआ की मदियन से कोई भी आगे बढ़ने को तैयार नहीं था। इस लिए हालात देखकर आपने एक ख़ुत्बा दिया लेकिन इस ख़ुत्बे से पहले अमीरे शाम ने हज़रत हसन को एक पैगाम भेजा और इसमें यह लिखा,

" हम आपकी शरतो पर मुहायदा करना चाहते हैं "

हज़रत हसन की फ़ौज के हालात इतने खराब हो चुके थे की उनको यह बात दुरुस्त लगी क्युकी जंग का मतलब था हार अपनी शर्त के मुहायदा का मतलब जीत।

हज़रत हसन ने अपनी फौजों से कहा ऐ मेरे दोस्तों भले मैं जंग में जीत जाऊं लेकिन खून तो मुसलमानों का ही बहेगा और मैं अपनी खिलाफत के लिए खून बहाना नहीं चाहता क्युकी तुममे से तमाम आज भी सिफ्फिन और नेहरवान का हर्जाना मांगते हैं, इस लिए मैं अपने को खिलाफत से दस्तबरदार करता हूं क्युकी हमारे खानदान को सिर्फ इस्लाम फैलाना है तुम्हारे ऊपर हुकूमत नहीं करना है। हमारे वालिद को भी तुम लोगो ने खलीफा बनाया था और मुझको भी तुम लोगो ने ही बनाया है, इस लिए बेहतर यही है की मैं अमीरे शाम से अपनी शरतो पर मुहायदा कर लूं और तुम्हारे जिन्दा रहने का रास्ता बनता हूं।

२५ रबिउल अव्वल ४१ हिजरी दोनों तरफ के फिरकीन मदियन में जमा हुए एक मुहायदा इस तरहा तैयार किया गया।

{ मुहायदा }

१} अमीरे शाम किताब-ए-खुदा और सुन्नत-ए-रसूल (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) पर अमल करेंगे।

२} अमीरे शाम को खिलाफतुल मुसलमीन कहलाने का हक़ नहीं होगा।

३} अमीरि शाम अपने बाद किसी को भी अपना जां-नशीन मुक़र्रर नहीं करेंगे।

४} शाम, इराक, हिज्जाज, यमन के बाशिंदों को अमान हासिल होगी और उनसे किसी भी तरहा का बदला नहीं लिया जाएगा।

५} हज़रत हसन और हज़रत हुसैन की आल औलाद को परेशान नहीं किया जाएगा और वह जहां चाहे रह सकते हैं यह हक़ उनको हासिल होगा।

६} जंग-ए-जमल, जंग-ए-सिफ्फिन और जंग-ए-नेहारवान में जो फौजी क़त्ल हुए है उनके खिराज की रकम में से १० लाख दिरहम बाटें जायेंगे।

७} शियाने अली को परेशान या क़त्ल नहीं किया जाएगा।

८} मुल्क-ए-शाम के मिम्बरो से हज़रत अली की शान में होने वली गुस्ताखियों को बंद किया जाए।

आखरी नुखते पर अमीरि शाम को ऐतराज़ हुआ लेकिन बाद में यह कहा गया की कम से कम जहां पर हज़रत अली की औलादे मौजूद हो उनके सामने ऐसी गुस्ताख़िया ना की जाए, इस मुहायदे पर हज़रत हसन, हज़रत हुसैन, अब्दुल्लाह बिन आमिर के दस्तखत हुए इस तरहा हज़रत हसन ने अपने को खिलाफत से अलग कर लिया और अपनी पूरी आल के साथ कुफे से मदीने आ गए।

मरवान बिन हाकम मदीने का गवर्नर मुक़र्रर हुआ, इधर शाम की हुकूमत को यह बात खटकने लगी की जबतक हज़रत हसन जिंदा है तब तक खिलाफत को बादशाहत में बदलना मुमकिन नहीं और यह बात हज़रत माविया के ख़ुत्बे से ज़ाहिर हुई जो इस तरहा था।

"ऐ कुफे वालो मैंने यह मुहायदा या जंग इस लिए नहीं चाही की हम तुम्हारे ऊपर इस्लाम की पाबंदिया ज़ाहिर करें या हिदायते दें बल्कि सिर्फ हमारा मकसद तुम्हारे ऊपर हुकूमत करना था और अब हम किसी भी कीमत पर यह हुकूमत बनी उम्मैया के हाथो से निकलने नहीं देंगे"।

इस के बाद कुफे के तमाम शियाने अली ने अपने ऊपर हो रही पाबन्दी और ज़ुल्मो के खिलाफ आवाज़ बुलंद करना शुरू कर दी यह खबर जब मदीने में हज़रत हसन के पास पहुंची तो आप कुफे वापस आ गए और कहा। ऐ मेरे चाहने वालो अगर तुम अपनी जान और माल की हिफाज़त चाहते हो तो जब तक माविया जिंदा है अपने घरो में छुपे रहो, मैं तुम्हारी तादाद और मुहब्बत देख कर अमीरि शाम से जंग कर सकता था और खुदा चाहता तो मैं फ़तेह भी होता यह मुमकिन नहीं था की मेरा एक भी चाहने वाला शहीद हुए बिना यह जंग जीत लेता यह सच है की दोनों तरफ से हज़ारो लोग शहीद होते मैं ऐसी खिलाफत के काहिल नहीं हूँ जो खून बहाने के बाद मिले।

इसके बाद हज़रत हसन माविया से मिलने शाम गए और दरबार में पहुँच कर आपने माविया को मुखातिब करते हुए कहा,

" जब तक मैं जिंदा हूँ तुम्हे मुहायदा तोड़ने नहीं दूंगा और ना ही मनमानी करने दूंगा, यह दीन हमारे नाना जान का है तुम्हारे नाना का नहीं. हमारा मुहायदा या जंग हमारी मजबूरी नहीं समझना हम आले रसूल (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) है जो भी हम करते हैं उसमे अल्लाह की मरज़ी होती है. आज की मरज़ी मुहायदा करने में थी इसलिए मुहायदा किया और अब अगर खुदा की मरज़ी जंग करना है तो जंग करेंगे, मैं भरे दरबार में ऐलान करता हूँ की उमैया कौन था और आप जिस फर्श पर पैदा हुए है उसे अच्छी तरहा जानते हैं "।

उमैया का मतलब छोटी लौंडी जिसका रंग काला और चेहरा दाग दार छोटा कद और चेहरे से मनहूसियत टपकती हुई नज़र आती है और इसको अपने चचेरे भाई हाशिम की औलादों से इस लिए नफरत थी क्युकी वह एक लौंडी की औलाद ना थे और खूबसूरत थे और इसको इसी बात की कमतरी का एहसास होता रहा उसने नफरत का वह बीज बोया जिसका पेड़ अब फलने और फूलने लगा है और अब हम आगे देखेंगे की इसमें आगे कैसे गुल खिलते है।

शायद मेरा जाहिल दिमाग कुरआन के एक अलफ़ाज़ पर जा रहा है जिसमे रसूल अल्लाह (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) का इरशाद है **सजरे मलउन**।

शहादत

सीधे तौर पर तो नहीं कहा जा सकते है, लेकिन तमाम बड़े इस्लामी फिरको के आलिमो की किताबे यह साबित करती है की हज़रत माविया ने हज़रत हसन को ६ बार ज़हर देने की कोशिश की लेकिन वह कामियाब नहीं हो पाए लेकिन सातवी कोशिश से यह साबित हुआ की इसमें हज़रत माविया का हाथ हो सकता था. क्युकी मरवान बिन हाकम जो मदीने का गवर्नर था उसने मुहम्मद बिन अशअस को अपना हमराज बनाया और एक रोमी दल्ला जिसका नाम अलसुनिया था उसके ज़रिये रोम से बहुत तेज़ असर वाला ज़ेहर मंगवाया था, क्युकी अलसुनिया शाम के दरबार में बराबर जाया करता था और उसने तमाम तिजारती सामान हुकूमत-ए-शाम को दिए थे, अब मरवान ने मुहम्मद बिन अशअस के ज़रिये एक झूटा जाल बिछाया, क्युकी हकीकी बहन ज़ादा बीनते अशअस हज़रत हसन कि बीवी थी, लेकिन ना इत्तेफ़ाकी कि वजह से ज़ादा और हज़रत हसन एक ही घर में अलग अलग रहते थे क्युकी ज़ादा ने एक बार हज़रत हसन के सामने कुछ खजूरे रखी और कहा यह ताज़ी खजूरे हैं नोश फरमाइए और वह खुद भी साथ में खजूरे खाने लगी, लेकिन हज़रत हसन कि खजूर खाते ही तबियत बिगड़ गई जो बाद में ठीक हो गई जिसमे निशान लगा था और जो खजूर हज़रत हसन ने खाई थी उसमे ज़हर था। इस हादसे के बाद से हज़रत हसन ने ज़ादा के हाथो का खाना पीना बंद कर दिया।

इसी बीच उमरू आस कि राय पर मुहम्मद बिन अशअस ने अपनी बहन ज़ादा को समझाया कि अगर तुम अपने शोहर हसन को किसी तरीके से ज़हर दे दो तो तुम्हे २ लाख

दिरहम इनाम में मिलेगा और तुम्हारा अगद (निकाह) शहज़ादे यज़ीद के साथ कर दिया जाएगा तुम यहाँ पर अब तक गरीबी कि हालत में रेह रही हो, जबकि तुम बेहद हसीन जमील हो और मैं चाहता हूँ के तुम रानी बनके रहो. जब हज़रत हसन सो रहे थे और उनके करीब उनकी बहन ज़ैनब और कुलसुम भी सो रही थी इसी का फायदा उठाते हुए ज़ादा चुपके से हज़रत हसन के सिरहाने रखे हुए पानी के गिलास में ज़हर डाल देती है. थोड़ी देर के बाद हज़रत हसन कि घबरा कर आंखे खुलती है और वह उठ कर बैठ जाते हैं और अपनी बहन ज़ैनब को आवाज़ देकर बुलाते है और उनसे कहते हैं अभी अभी हमने ख्वाब देखा है कि नाना जान कह रहे हैं कि कल तुम मेरे पास होगे. ख्वाब सुनाने के बाद हज़रत हसन ने बहन ज़ैनब से पानी माँगा और जैसे ही आपने एक घूँट पानी पिया तो आप चिल्ला उठे और कहा यह कैसा पानी था कि जिसने हलक से लेकर नाफ तक आग लगा दी और मेरा कलेजा पारा पारा कर दिया। इसी दरमियान एक उलटी होती है और जिगर के ७० टुकड़े निकलते है और रूह परवाज़ कर जाती है।

गुसल और कफ़न के बाद आपका जनाज़ा कब्र-ए-रसूल (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) कि तरफ रवाना होता है, लेकिन वहाँ के मौजूदा गवर्नर मरवान बिन हाकम वहाँ पर दफ़न करने से मना कर देता है। काफी जद्दो जेहद के बाद यह मसला उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीका के सामने पेश होता है, लेकिन तारीख गवाह है आप भी मना फरमा देती है, आप फरमाती है यह मेरा मुकाम है और हमारी मिलकियत है, लिहाजा हम ऐसा नहीं चाहेंगे, इसी दरमियान मसला काफी पेचीदा हो जाता है और बनी हाशिम अपनी तलवारे तान देते हैं। दूसरी तरफ से तीरो को बौछार शुरू हो जाती है और कुछ तीर आपके जनाज़े में पेवस्त हो जाते

हैं। लेकिन हज़रत हुसैन के कहने पर बनी हाशिम खामोश हो जाते हैं। आखिर कार आपका जनाज़ा जन्नतुल बकी में दफ़न करदिया जाता है जहां पर आपकी वालिदा भी आराम फरमा है ।

शाम में जशन

जब हज़रत हसन कि शहादत कि खबर अमीरि शाम के दरबार में पहुँचती है तो हज़रत माविया ज़ोर कि तकबीर बुलंद करते है, उनकी देखा देखी तमाम दरबारी भी तकबीर भेजते हैं और सजदा-ए-शुक्र में गिर जाते हैं। जब यह शोर हरम तक पहुँचता है तो आपकी ज़ौजा फातमा बीनते करज़ा दौड़ी हुई आती है और शोर कि वजह पूछती है। जब आप यह सुनती है कि हज़रत हसन अब दुनिया में नहीं रहे तो यह ख़ुत्बा देती है, जो इस तरहा था " ऐ दरबारियों हम कैसे मुसलमान है कि हमारे रसूल (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) का नवासा शहीद हो गया और हम जशन मना रहे हैं, क्या हम रोज़ाए हशर में रसूल (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) के सामने खड़े हो सकेंगे "।

इस ख़ुत्बे का यह असर हुआ के दरबार में सादगी का माहौल बन जाता है। यहाँ पर मैं यह बता दूँ के अमीरि शाम का महल बेहद हसीन और खूबसूरत ईमारत थी क्युकी फ़तेह शाम के दौरान मुसलमानो का इसपर कब्ज़ा हो गया था। यह एक गिरजा घर था जिसको मरम्मत करवा करके गवर्नर हाउस बना दिया गया और आज भी इस इमारत में इसकी निशानिया मौजूद है आज भी ज़ाहिरीन यहाँ पर आया जाया करते हैं।

ज़ादा का अंजाम

हज़रत हसन कि शहादत के फ़ौरन बाद गवर्नर मरवान बिन हाकम ने २ कनीज़ों और १ गुलाम के साथ ज़ादा बिन अशअस को शाम रवाना कर दिया दरबार में पेश होते ही हज़रत माविया ने इसके हाथ पैर बन्धवा कर दरिया-ए-नील में फिकवा दिया जहां पर ज़िंदा घड़ियालों ने उसे खा लिया। फिकवाने से पहले हज़रत माविया ने कहा कि जब तू रसूल (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) के नवासे कि ना हो सकी तो मेरे फ़र्ज़न्द कि कैसे हो सकती है।

औलादे और अजवाज़

किताबो और तारीखों से यह साबित होता है कि हज़रत हसन ने ९ निकाह किए, तमाम दुसरे आलिमो कि किताबो में यह भी लिखा है कि आपने कसरत से निकाह किए जिनकी गिनती तक़रीबन १७ या १८ होती है। लेकिन मेरे नज़दीक जो मैशहूर आलिमो कि रिवायते है जैसे जनाब सही बुखारी कि रिवायत को हर फिरका एक हद तक सही मानता है। इनकी तादाद ९ हो इसके अलावा तारीखे इस्लाम, तारूफ़े इस्लाम वगैराह वगैराह ने १७ से १८ तक लिखा है लेकिन तफ्सील नहीं लिख सके।

जौज़ाओ के नाम

१) उम्मे बशीर बीनते अबु मसूद :- इनसे एक बेटा ज़ैद पैदा हुआ और दो बेटियां उम्मुल हसन, उम्मुल हुसैन. ज़ैद कि पैदाइश ३० हिजरी में हुई ज़ैद कि नसल खलीफा यज़ीद बिन वलीद थे।

२) जनाबे खुला बीनते मंज़ूर फ़ज़रिया :- आपसे एक औलाद हुई जिनका नाम हसन मुसनना था यह जंग-ए-कर्बला में शरीक हुए और ज़ख़्मी होकर बेहोशी कि हालत में पड़े थे जब तमाम शहीदो कि गर्दने काटी जा रही थी तब इनको ज़िंदा पाया इनके मामू अबु हसन जो इब्ने ज़ियाद कि फ़ौज में थे इन्होने ले लिया। ५२ साल कि उम्र में वक़त के खलीफा सुलेमान बिन अब्दुल मलिक ने ज़हर देकर शहीद किया यह वाकिया ९७ हिजरी का है इनसे भी हज़रत हसन कि नसल आगे बढ़ी. मशहूर सूफी अब्दुल कदीर जीलानी ४३० हिजरी आपकी नसल से ही हुए.

३) उम्मे बलद बीनते अब्दुल्लाह :- आपसे बेटा उमरू, कासिम, अब्दुल्लाह, अब्दुल रहमान इस तरहा ४ बेटे हुए. अब्दुल रहमान जो काफी छोटे थे बच गए।

४) ज़ादा बीनते अशअस :- इनसे कोई औलाद नहीं हुई।

५) उम्मे इसहाक बीनते तल्हा :- इनसे एक बेटा असरम (हुसैन), दूसरा बेटा तल्हा और एक बेटी फातिमा पैदा हुई।

६) फकरिया बीनते अब्दुल्लाह :- आपसे एक बेटी उम्मे अब्दुल्लाह हुई।

७) रमला बीनते हारिस :- आपसे एक बेटी उम्मे सलमा पैदा हुई।

८) उम्मुल कैस :- इनसे एक बेटी फातिमा पैदा हुई।

९) उम्मुल हुसैन :- आपसे एक बेटी स्कैया पैदा हुई।

यज़ीद बिन माविया

२२ हिजरी कि शुरुआत में हज़रत माविया मदीने से ईरान कि तरफ जा रहे थे तो नजद के जंगलो के पास ऐसी तबियत बिगड़ी कि हकीमो ने यह बतलाया के इसका इलाज सिर्फ सहवत यानि शादी है. (आपने जब रसूल-ए-खुदा (सल्लला हु अलैहे वसल्लम)से यह सुना था के हामरे नवासे हुसैन का क़त्ल माविया कि आल के हाथो होगा तो आपने शादी का इरादा ख़त्म कर दिया था लेकिन रसूल (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) का कौल झूटा नहीं हो सकता) इस लिए हालात ने शादी के लिए मजबूर कर दिया क्युकी इसका इलाज शहवत ही था इसी आनन फानन में लड़की ढूंढी जाने लगी पास ही के जंगलो में कबिले कलबी कि एक लड़की मेह्सूमा बीनते बेहदील कलबी से निकाह हुआ हज़रत माविया कि **उम्र ३८ साल** थी, **२४ शव्वाल २२ हिजरी** को **यज़ीद पैदा हुआ** क्युकी मेह्सुमा बीनते बेहदील एक जंगली कबिले कि लड़की थी उसका कबीला बहुत खूंखार और जाहिल था, इसलिए माविया के महल में उसका दिल नहीं लगता था और हर वक़त अपनी हमजोलियों के खायालो में डूबी रहती थी। हज़रत माविया से कोई ख़ास दिलचस्पी नहीं थी इसलिए शादी के २ महीने बाद ही इसकी तलाक हो गई और यह अपने मायके वापस आ गई, इसलिए यज़ीद कि पैदाइश ही नजत के जंगलो में हुई और परवरिश उसी जंगली माहौल में हुई. लेकिन कुछ सालो के बाद हज़रत

माविया को बेटे कि मुहब्बत जागी और यज़ीद को आप अपने महल में ले आये, अब क्युकी जंगली तरबियत थी, लिहाजा वह शाराब पीता था और कुत्तो से खेला करता था लेकिन आप अपने महल में कुत्ते रखना ना पसंद करते थे और यज़ीद कि आदत छुड़ाने के लिए आपने तमाम किसम कि बिल्लियाँ पाल रखी थी, लेकिन कुछ वक़्त बाद माँ कि मुहब्बत यज़ीद को महलो से जंगल ले गई।

यज़ीद कि ज़िन्दगी जंगल और महल के बीच रेह गई। जंगल कि तरबियत से खूंखार और ज़ालिम इंसान बना और महल कि तरबियत से एक शायर भी बना।

हालात-ए-मदीना

रसूल (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) ने अपनी इस्लामी ज़िन्दगी हकीकत में अगर देखा जाए तो मदीने से ही शुरू हुई, मदीने वालो नो नबी-ए-करीम (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) का ख़ुलूस और मुहब्बत से साथ दिया, बड़ी बड़ी जंगो में मदीने के अंसार शरीक हुए और शहीद भी हुए, रसूल (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) के कहने पर ही उन्होंने मक्के वालो को अपनी जायदादें दी और भाई बनाया लेकिन रसूल (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) कि वफात के बाद ही मदीने के अंसारों का रुख बदल गया और वह अपने इन कामो के बदले खिलाफत, ऊंचे औधे और पैसा चाहने लगे और वक़्त के हर खलीफा के दौर में उनकी येही मांग रही कि बड़े बड़े शहरो के गवर्नर बने इसके अलावा वह यह भी चाहते थे के हाकिम भी उनका हो और आमिल भी उनका हो और आहिस्ता- आहिस्ता यह लोग इस्लामी बातो से दूर होते गए। यहाँ तक जब रसूल (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) कि दुख्तर जनाबे फातमा का घर जलाया गया तो कोई भी मदद को नहीं आया सब लोग तमाश बीन बने, इमाम

हसन कि शहादत के बाद उनके लाशें कि बेहुरमती हुई तब भी तमाश बीन बने, हज़रत उस्मान को बेदरदी से शहीद किया, हज़रत आएशा कि शहादत के बाद भी खामोश रहे यहाँ तक कि ४६ हिजरी में अबी विकास शहीद किये गए तब भी खामोश रहे, हद तो तब हो गई जब हज़रत हुसैन ने मदीना छोड़ा उस वक़त भी तमाशा देखते रहे उनको रोकने कि कोशिश नहीं कि इन तमाम बातो से यह साबित होता है कि इस्लाम के सबसे बड़े मदद गार मुसलमान (यह सच है इतना बदल गया यह कैसे मुसलमान थे अगर रसूल (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) कि आल से नफरत थी तो हज़रत उस्मान का क़त्ल क्यों किया और अगर खलीफाओं से नफरत थी क्युकी उनका खलीफा नहीं बना) हज़रत हुसैन को क्यों नहीं रोका इससे यह बात साबित होती है कि मदीने वाले मक्का के मुसलमानो से जलन रखते थे नहीं तो क्या पैसो से बिक चुके थे, या ऊंचे ओहदे पर तैनात हो चुके थे।

हालात-ए-मक्का

जाहिलयत के दौर और इस्लामी दौर दोनों ही सूरतो में मक्का एक एहमियत रखता था. जाहिलियत के दौर में मक्के में काबा एक कुर्बान गाह कि शक्ल में था और इस्लाम के बाद मुसलमानो कि क़िब्ले कि शक्ल में वहाँ कि कोई भी वारदात, कोई भी हादसा मिस्र से लेकर हिन्द तक अपना असर डालता था क्युकी इस ज़मीन का सबसे अच्छा इंसानी गिरोह यानि हाश्मी खानदान, यानि रसूल (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) का खानदान हज़रत इस्माइल कि आल वही वाकिये थी. लेकिन फिर भी रसूल (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) के ऐलाने नबूवत के बाद जो भी मसायब रसूल (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) पर आया चंद को छोड़ कर मक्के ने साथ नहीं दिया और उनके खुदके खानदान

वाले ही उनके खिलाफ हो गए यहाँ तक खुदा को हुक्म करना पड़ा कि ए मेरे हबीब आप हिजरत कर जाइए।

हमने देखा कि अगर खुदा किसी को (पैगम्बर) जाने का हुक्म देता है तो वहाँ के बाकी बचे बाशिंदो पर आज़ाब नाज़िल कर देता है, मिसाल के तौर पर हज़रत मूसा और फिरऔन का वाकिया कि (जब दरिया-ए-नील का पार करना) इसके हिसाब से खुदा मक्के वालो से राज़ी नहीं था और जिनसे खुदा राज़ी ना हो तो वह कौन हुए आप बेहतर जानते है, यहाँ तब कर्बला के वाकिये के बाद मक्का वाले खुद रसूल (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) के खानदान वाले खामोश रहे इसकी वजाह यह भी हो सकती है कि अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर ने हज़रत हसन कि शहादत के बाद खुद अपने को खलीफा बनाना चाहा और मक्के वाले इस इंतज़ार में रहे कि शाम और मदीने कि लड़ाई (खिलाफत के लिए) का क्या अंजाम होता है, वह सिर्फ हुकूमत के साथ रहना चाहते थे उनको किसी खलीफा से कोई मतलब नहीं था और वह हुकूमत के लिए किसी को भी मार सकते थे चाहे वह आल-ए-अबु सुफियान हो या आल-ए-नबी (सल्लला हु अलैहे वसल्लम)।

हालात-ए-दमिश्क

जनाबे माविया १८ हिजरी से लेकर ६० हिजरी तक दमिश्क में ही रहे और यहाँ पर लोग जब मुसलमान हुए तो उन्हें खालिद बिन वलीद, ज़ोहान बिन कैस जैसे लोगो का किरदार देखा। यह दोनों नाम पिछले वाकिये में आ चुके हैं इनका कट्टर पन साबित हो चूका है। शाम के बाशिंदो के बारे

में शुरू से ही मैशहूर था कि इनकी अकल कुंद और तलवारे तेज़ होती थी और यह अपने हाकिमो के बड़े फरमा बरदार होते थे। जब हज़रत अली के खिलाफत कि बात इनके कानो तक पहुंची तो खुद अब्दुल्लाह बिन हारिस ने कहा कि मुझे इल्म नहीं था के हज़रत उस्मान के अलावा रसूल (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) का कोई और भी वारिस है।

खुद हज़रत अली ने अपने जाँनिसारों से कहा कि मैं चाहता हूँ कि तुम में से १० माविया को देकर उनसे एक शामि ले लूँ क्युकी वह तुमसे कहीं ज़ादा अपने हाकिमो के वफादार हैं। खुद हज़रत माविया ने यज़ीद से कहा था कि जंग में शामियो को हमेशा आगे रखना और जंग ख़त्म हो जाए तो उनको फ़ौरन वापस बुला लेना जिससे वह दूसरो कि सोहबत में ना आये।

हालात-ए-कुफा

१७ हिजरी में साद बिन अबी विकास ने कूफ़े कि नीव डाली और वह इस्लामी फौजो का कयाम गाह बना क्युकी बेहर-ए-रोम से बेहर-ए-हिन्द कि तरफ आने का एक बेहतरीन रास्ता था रोम का तिजारती ताल्लुकात हिन्द से ना हो सके इसलिए कूफ़े में फौजो का रहना जरूरी था, साद बिन अबी विकास कि दूर अंदेशी भी केह सकते हैं। यह दमिश्क कि हुकूमत के करीब फौजो का जमाव, चाहे उनसे मदद के लिए, चाहे उनको दबाने के लिए, यहाँ कि आबो हवा अच्छी होने कि वजाह से और दरिया-ए-फ़ुरात का किनारा तमाम अरब के लोगो को यहाँ खींच लाया जिसमे बड़े-बड़े आलिम, जांबाज़, हुनरदार, दौलतमंद मौजूद थे। यहाँ तक जंगे बसरा के बाद हज़रत अली ने इसे दारुल खिलाफत बनाया, यहाँ के लोगो कि यह खासियत थी कि अगर हुकूमत ज़ालिम और ताकत वर है तो

यह लोग कमज़ोर और बुज़दिल बनकर घरो में बैठे रहते थे और अगर हुकूमत नेक और कमज़ोर है तो यह बगावत पर उतर जाते थे और हमेशा यह चाहते थे कि हुकूमत में इनकी दखल अंदाज़ी रहे लेकिन कमज़ोरी यह थी कि यह सबही लोग लालच के तेहत बसे थे जैसे हुनरमंद हुनर से कमाए, दौलतमंद तिजारत से कमाए, जांबाज़ फौजो में भरती हो कर, आलिम ऊंचे ओहदे पाकर वगैराह-वगैराह यानि किसी न किसी चीज़ का लालच इनमे भरा था और यह दौलत के आगे झुक जाया करते थे चाहे वह जैसे भी मिले।

शायद इसी बात को समझ कर जनाबे माविया ने यज़ीद से कहा था कि अगर कूफ़े के बाशिंदे रोज़ गवर्नर बदलने कि बात करे तो मान लेना क्युकी एक आमिल बदलने से एक लाख तलवारों का सामना करने से बचे रहोगे। यहाँ के बाशिंदो को दमिश्क कि हुकूमत हमेशा खलती थी और वह चाहते थे कि कूफ़े कि हुकूमत पूरी इस्लामिक हुकूमत पर राज़ करे।

यज़ीद कि वली अहदी

जब तक हज़रत हसन ज़िंदा थे अमीरि शाम के लिए यज़ीद कि वली अहदी का ऐलान करना बहुत मुश्किल काम था हज़रत हसन के बाद खिलाफत का सबसे बड़ा हकदार अब्दुल रहमान बिन खालिद बिन वलीद जो दमिश्क में ही रहते थे अब क्युकी शामियो के ऊपर खालिद का बड़ा दब दबा था तो शामि उनके बेटे अब्दुल रहमान को यज़ीद से ज़यादा खलीफा देखना पसंद करते थे यह बात जनाबे माविया को बखूबी मालूम थी। जनाबे माविया ने ४६ हिजरी में एक गुलाम के ज़रिये अब्दुल रहमान को ज़हर देकर मार डाला।

५० हिजरी में हज़रत हसन भी शहीद हो गए हज़रत हसन कि शहादत के बाद कूफ़े के गवर्नर मुनगिरा बिन शीबा को एक ख़त भेजा और उसमे लिखा था मैं यज़ीद को अपना जाँनशीन बनाना चाहता हूँ और तुम कूफ़े में चाहे जैसे भी उसकी वली अहदी का ऐलान करो क्युकी अगर कूफ़े के आलिम तैयार है तो मक्का और मदीने में मुश्किल पेश नहीं आएगी, मुनगिरा ने कहा यह बहुत मुश्किल काम है क्युकी यज़ीद कि बदकारियाँ उसके नाम के साथ जुडी है और बगावत का ख़तरा है, इस लिए अभी जल्दी ना करें, वैसे मैं खूफिया तौर पर इस काम को अंजाम देता रहूंगा। लेकिन ५१ हिजरी में मुनगिरा बिन शीबा का इंतेकाल हो गया, लेकिन फिर भी वह कुछ बड़े बड़े दौलतमंद और ताकतवर लोगो को राज़ी करवा चुका था. मुनगिरा के बाद अमीरे शाम ने बसरा के गवर्नर ज़ियाद बिन आविया को भी इस काम के लिए ख़त भेजा क्युकी बसरा कारोबारी हिसाब से उस वक़त एहमियत रखता था वहाँ के गवर्नर तक़रीबन खलीफा होने के बराबर कि हैसियत रखते थे. ज़ियाद यह पहले से जानता था के हज़रत हसन कि शहादत के बाद क्या होने वाला है, लेकिन ख़त पढ़ कर परेशान हो गया और जवाब में कहा अमीरूल मोमिनीन आप इस काम में जल्दी ना करें क्युकी अभी हज़रत हुसैन बिन अली, अब्दुल रहमान बिन अबुबकर, अबु जावेद बिन हज़रत उस्मान, अब्दुल्लाह बिन हज़रत उमर, अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर वगैराह ज़िंदा है और सबसे बड़ी बात यह है कि हज़रत आएशा भी ज़िंदा है। इसके अलावा यज़ीद का किरदार और अमल मुसलमानो से छुपा नहीं है, बेहतर यही होगा कि यज़ीद को अपने में बदलाव लाना होगा वरना आपका ख्वाब कभी सच नहीं होगा मुझे यकीन है कि छोटे छोटे लोगो को दौलत से खरीदा जा सकता है। लेकिन बड़ी शकशीयते दौलत के आगे नहीं झुकेंगी, फिर भी मैं खूफिया तौर पर धीरे धीरे इस काम को अंजाम दूंगा और आपको मेरी राय है के अब और किसी गवर्नर को ऐसा ख़त ना लिखे नहीं तो बगावत हो सकती है. लेकिन ५३ हिजरी में ज़ियाद बिन

आविया का इंतेकाल हो गया, अब बागडोर सीधे तौर पर जनाबे माविया के हाथ आ गई. ५४ हिजरी में माविया ने मदीने के गवर्नर मरवान बिन हाकम को एक ख़त भेजा और कहा जिस तरहा मुमकिन हो तुम उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा को हमारे हक़ में राज़ी कर लो और अगर वह राज़ी हो जाए तो उन्हें दमिश्क भेजो क्युकी मुसलमानो का बहुत बड़ा तबका उनके साथ है, इत्तेफाकन मरवान से गलती हो गई उसने अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के बजाए अबुल रहमान बिन हज़रत अबुबकर जो कि हज़रत आएशा कि बहन कि हकीकी लड़के थे उनसे राब्ता कायम किया और उनको २ लाख दिरहैम के बदले हज़रत आएशा कि मरज़ी खरीदनी चाही जो कि मुमकिन नहीं थी। मरवान यह भूल गया कि हर शख्स दौलत से नहीं बिकता। और इसी लिए अब्दुल रहमान ने इंकार कर दिया और कहा ऐसी दौलत से बेहतर मैं ईमान को समझता हूँ और आगे यह कहा " ऐ मरवान आखिर कार हाकिम-ए-शाम कि दिल कि बात आज ज़ाहिर ही हो गई "।

मरवान ने इस वाकिये कि खबर फ़ौरन माविया को भेजी और कहा अब अब्दुल रहमान बिन हज़रत अबुबकर से होशियार रहने कि ज़रूरत है नहीं तो यह मामला आगे बढ़ सकता है और अगर इसकी खबर उम्मुल मोमिनीन जनाब-ए-आएशा को पहुँच गई तो सारा खेल धरा के धरा रेह जाएगा और यज़ीद कि वली अहदी का मामला अटक जाएगा। जनाबे माविया शुरू से ही हर कदम फूँक-फूँक रख रहे थे और वह नहीं चाहते थे कि उनके फ़रज़न्द कि वली अहदी में कोई शख्स रूकावट पैदा करे. इसलिए आपको जिससे ख़तरा महसूस हुआ उस शख्स हो हमेशा-हमेशा के लिए आपने मौत कि नींद सुला दिया। अब हम यह तो नहीं केह सकते कि जनाब अब्दुल रहमान बिन हज़रत अबुबकर को जनाबे माविया ने सीधे तौर पर इनका काम तमाम करवाया क्युकी ४ जिलहिज ५५ हिजरी को अब्दुल रहमान बिन हज़रत अबुबकर शहीद हो गए। ५६ हिजरी के शुरू से ही जनाब ए

माविया कि परेशानिया बढ़ने लगी क्युकी यज़ीद कि नारफमानिया और बदकारियाँ बढ़ती जा रही थी। इस वजह से जनाब ए माविया चाह कर भी यज़ीद कि वली अहदी का ऐलान नहीं कर सकते थे। लेकिन मक्का, मदीना, कुफा, बसरा वगैराह वगैराह शहरो में यज़ीद कि पुरज़ोर मुखालिफत थी लेकिन इसके अलावा ज़यादा तर शहरो में लोग यज़ीद को वली अहद मान चुके थे क्युकी माविया कि तलवार और अक्ल दोनों ही तेज़ थी इस लिए डर और खौफ दोनों ही वजहों से तमाम इस्लामिक मुल्को ने यज़ीद कि मुखालिफत नहीं कि, लेकिन जो शहर अभी तक यज़ीद कि मुखालिफत कर रहे थे, उन मुल्को कि हैसियत ज़यादा एहमियत रखती थी। क्युकी तिजारत के हिसाब से यह सभी मुल्क काफी अमीर थे जनाब-ए-माविया यह जानते थे कि जब तक उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रदिअल्लाह ताला अन्हा ज़िंदा है तब तक यह काम बहुत मुश्किल है। क्युकी उनकी हैसियत मुफ़्ती-ए-आज़म कि थी और किरदार-ए-यज़ीद से अच्छी तरहा वाकिफ थी और वह किसी भी हाल में यज़ीद कि वली अहदी का ऐलान कबूल नहीं करती। इस लिए जनाब-ए-माविया ने जब देखा कि जिन जिन लोगो को ख़त लिखे उन सब ने यही कहा कि यह काम इतना आसान नहीं है और बगावत का डर है और ज़यादा तर लोगो ने माविया को यह हिदायत दी थी और किसी से इस बारे में तस्किरा ना करें वरना यह काम और मुश्किल हो जाएगा, तमाम लोग तो यज़ीद कि मुखालिफत में थे ही लेकिन सबसे बड़ी स्कावट उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा ही थी. पहले तो तमाम तरीको से यानि हथकंडो से यह कोशिश कि गई कि किसी तरीके से सब लोग राज़ी हो जाए, खुसूसन हज़रत आएशा। लेकिन जब माविया ने देखा कि अब किसी भी तरीके से कोई भी शक्शियत मानने वली नहीं है, तो उन्होंने अपनी तलवार और अक्ल का इस्तेमाल करना शुरू किया वैसे ही जैसे तमाम रास्ते में आने वाले नबी-ए-करीम (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) के असहाब को क़त्ल किया।

एक चाल के तहत जनाबे माविया ने ५७ **हिजरी** के आखिर में बड़ी ख़ूबसूरती से हज़रत आएशा को बाद नमाज़-ए-ईशा दावत के लिए बुलाया, आपने दावत क़ुबूल कर ली लेकिन यह भूल गई कि माविया के दिल में बदला भरा हुआ है, शायद उस वाकिये को भूल गई कि जब उन्होंने मस्जिद-ए-नबुवि के मिम्बर पर बैठने से रोका था क्युकी जनाब-ए-माविया मज़ाक उड़ा रहे थे और यह बात माविया को बहुत बुरी लगी थी के इतनी हिम्मत कि मुझे रोके लेकिन मजबूर थे क्युकी आप उम्मुल मोमिनीन थी और कोई भी आपको मना नहीं कर सकता था, उस वक़्त माविया ज़हर का घूँट पी कर रेह गए और दिल में ठान ली कि इसका बदला लूँगा और वैसे भी यज़ीद कि वली अहदी का ऐलान हज़रत आएशा के ज़िंदा रहते मुमकिन नहीं था। इस लिए एक तीर से २ निशाने लगाने का बेहतरीन मौक़ा था।

जनाबे माविया ने एक खड्डा खुदवाया जिसकी गहराई १० फिट और चौड़ाई ५ फिट थी उस खड्डे के अंदर धार दार भाले, तीर और सीधी तलवारे गाड़ दी उसके बाद खड्डे के ऊपर बारीक लकड़ी कि परत बिछा दी लकड़ी के ऊपर काई के रंग कि परत बिछा दी एक हलके किस्म कि कुरसी उसके ऊपर रख दी जिससे कि ज़यादा बोझ ना पड़े बाद नमाज़-ए-ईशा हज़रत आएशा रदीअल्लाह ताला अन्हा तशरीफ़ लाइ उस वक़त आपकी **उम्र ६४ साल** थी जनाबे माविया ने आपको बैठने का इशारा किया और जैसे ही आप कुर्सी पर बैठी उनके वज़न से कुरसी खड्डे में गिर गई और आपके जिस्म के अंदर मौजूद तलवारे और भाले आर पार हो गए। काफी बे रहमी से आपको क़त्ल किया गया, जुर्म को छुपाने के लिए जनाबे माविया ने उस खड्डे के अंदर चूना भर दिया ताकि आपका जिस्म गल जाए और एक राज़ हमेशा के लिए दफन हो जाए इस तरहा नबी-ए-करीम (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) के चाहने वाले ने उनकी ज़ौजा को हमेशा के लिए मौत कि नींद सुला दिया और यह राज़ हमेशा के लिए

राज़ ही रह गया। यह वही उम्मुल मोमिनीन है जिनकी पाकीज़गी के लिए खुदा ने **सूरेह नूर** उतारी। लेकिन हाय अफ़सोस अपनी औलाद कि खातिर जनाबे माविया यह भूल गए कि यह हमारी भी माँ है, खुदा सब जानता है और देख रहा है जैसी करनी वैसी भरनी।

५८ हिजरी कि शुरूआत में काफी तलातुम मच गया लेकिन जिस शातिराना अंदाज़ से उम्मुल मोमिनीन का क़त्ल किया गया जिसकी भनक किसी को नहीं लगी और यह ऐलान करवा दिया गया कि उम्मुल मोमिनीन लापता हो गई है ढूंढने वाले को या पता बताने वाले हो या खबर देने वाले को २००० दिरहम का इनाम दिया जाएगा।

इस तरह जनाबे माविया ने यज़ीद कि वली अहदी का रास्ता साफ़ कर दिया लेकिन फिर भी आपके सामने चुनौतियाँ थी और सबसे बड़ी चुनौती थी कि हज़रत हुसैन इब्ने अली ज़िंदा है और उनके होते हुए यज़ीद को वली अहद बनाना मुश्किल ही नहीं ना मुमकिन था। लेकिन मजबूरी यह थी कि हुसैन को क़त्ल करने का मतलब था सभी मुस्लिम मुल्को से दुश्मनी मोल लेना और खुद अपनी हुकूमतों में बगावत को दावत देना था और उनको यह भी याद था कि उन्होंने हज़रत हसन इब्ने अली से एक मुहाइदा किया था कि माविया के बाद यज़ीद खलीफा नहीं बन सकता अगर मुहाइदा तोड़ा जाता है तो दुसरे मुल्को में और बड़ी शख्शियतों में एक गलत पैगाम जाएगा. इसलिए जनाबे माविया ने ५८ हिजरी में कोई ऐसा कदम नहीं उठाया जिससे कि उनको हार का सामना करना पड़े इसलिए जनाबे माविया ने यज़ीद से कहा देखो जब तक हुसैन जिन्दा है और जहां भी रहते हैं उनको कतई परेशान नहीं करना वह जैसे भी जहां भी चाहे रह सकते है और अपने फैसले खुद ले सकते हैं। उनपर किसी भी तरहा कि पाबंदियां लागू नहीं करना चाहे कुछ भी हो जाए।

५९ हिजरी आते आते जनाबे माविया ने सभी हुकूमतों पर अपने गवर्नर काबिज़ कर दिए थे और अंदरूनी तौर पे यह ऐलान भी कर दिया था कि यज़ीद उनका जाँनशीन होगा और यज़ीद को बराबर ताकीद कर रहे थे के देखो तुम क़त्ल-ए-हुसैन में शरीक मत होना। क्युकी माविया जानते थे के क़त्ल-ए-हुसैनी उनकी औलाद कि बर्बादी कि वजाह बन जाएगी और दुनिया में इतनी बदनामी हासिल होगी के कोई भी अपना नाम यज़ीद नहीं रखेगा।

जनाबे माविया ने अपनी ज़िन्दगी में हुकूमत को सम्भालने और चालाने में वाजिब और गैर वाजिब तरीको का इस्तेमाल किया लेकिन आपने अपने आखरी वक़त में अपने गुनाहो कि बहुत माफ़ी मांगी " ए मेरे खुदा तू मुझसे वाकिफ है जो भी मुझसे गुनाहे कबीरा और गुनाहे सगीरा हुए है तू मुझे माफ़ कर दे। और हमे जहन्नम से बचा यानि जनाबे माविया को अपने गुनाहो का एहसास था कि उन्होंने नबी-ए-करीम (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) के खानदान वालो से अच्छा सुलूक नहीं किया और **२२ रज्जब ५९ हिजरी** को जनाबे माविया का इंतेकाल हो गया।

अब यज़ीद के हाथ में हुकूमत कि बाग-डोर आ गई जैसा कि हमने ऊपर लिखा है कि यज़ीद का किरदार शरई नहीं था यानि गैर शरई था। इस लिए उसने अपने मन माफिक हुकूमत चलाने कि तैयारी कि और इसी वजाह से उसने अपनी हुकमतो के गवर्नरो को काफी सख्त हिदायते दी और वह जानता था कि हमारी मंजिल और मंसूबे इतनी आसानी से पूरे होने वाले नहीं है जब तक के हसरत हुसैन इब्ने अली बैत ना करें। इसी के तहत उसने मदीने के गवर्नर वलीद को एक ख़त भेजा के तुम फ़ौरन हुसैन से बैत लो।

यह वाकिया **२६ रज्जब ६० हिजरी** का है जब वलीद ने हज़रत हुसैन को यज़ीद का ख़त दिखाया। हज़रत हुसैन तैश में आ गए क्युकी उस ख़त में यह भी लिखा था कि अगर हुसैन बैत ना करे तो उनका क़त्ल कर देना। लेकिन फिर भी हुसैन ने अपने ऊपर काबू पाया और जाते जाते वलीद से यह कहा कि हम सबके सामने और मौजूदगी में बैत करेंगे।

हज़रत हुसैन का मदीना छोड़ना

हज़रत हुसैन अपने घर पहुँचते ही एक ख़ुत्बा देते हैं कि अब हम लोग मदीने में नहीं रहेंगे क्युकी हम किसी भी हाल में यज़ीद से बैत नहीं कर सकते और मदीने में रेह्कर नाना जान के दीन कि हिफाजत अब मुमकिन नहीं, मैंने अपने नाना जान से जो वादा किया है वह मदीने में रेह्कर पूरा नहीं हो सकता इस लिए हम सबको मदीना छोड़ना होगा आपने अपनी तमाम ज़ौजाओ तमाम बनी हाशिम और बनी कमर को इकठ्ठा किया और सफ़र कि तैयारी में जुड़ गए। जैसे ही मदीने वालो को खबर लगी कि हज़रत हुसैन अपने एहलो अवाल के साथ मदीना छोड़ रहे है तो सभी लोग आपके घर के बहार इकठ्ठा हो गए और रोकने कि बहुत पुरजोर कोशिश कि यहाँ तक कि नबी-ए-करीम (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) का वास्ता भी दिया लेकिन आप अपनी तैयारी में लगे रहे किसी कि एक भी ना सुनी। **२८ रज्जब ६० हिजरी** को हुसैन ने अपने एहलो अवाल के साथ मदीना छोड़ दिया और **५ दिन बाद** आप सभी हज़रात मक्का पहुँच गए। **३ शाबान ६० हिजरी** आज ही हुसैन मक्का पहुंचे और आपकी **उम्र ५७ साल हो चुकी है,** इत्तेफाक यह है आज ही आपकी यौमे पैदाइश भी है, इत्तेफाक है के इसी

जगाह से नबी-ए-करीम (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) ने हिजरत कि और मदीने पहुंचे और हुसैन ने मदीने से हिजरत कि और मक्का पहुंचे यह भी इत्तेफाक कि नबी-ए-करीम (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) जब मदीने पहुंचे तो नई ज़िन्दगी, हुसैन जब मक्का पहुंचे तो उनकी भी नई ज़िन्दगी।

जब हुसैन मदीने से आये तो यह काफिला तक़रीबन ५०० लोगो का था और हुसैन यह चाहते थे के मक्का वालो को उनकी वजाह से कोई तकलीफ या दिक्कत ना पहुंचे, आपका कौल था जियो और जीने दो, खुदा कि इबादत करना और लोगो के काम आना इसी पैगाम के साथ आप लोगो से मिलते गए और लोग आपके होते गए. लेकिन जब अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर ने आपकी मकबूलियत देखि तो घबरा गया कि अगर ऐसे ही हाल रहा तो मक्के वाले हुसैन को अपना इमाम कबूल करलेंगे इसकी खबर जब यज़ीद को पहुंची तो उसने यह बेहतर समझा कि क्यों न हुसैन को मक्के में क़त्ल करवा दिया जाए। लोग कहेंगे किसी अज़नबी ने अपनी दुश्मनी निकाल ली। इस लिए तक़रीबन ३००० सिपाहियों को हाजियों कि शक्ल में भेजा ताकि उनका (हुसैन) तवाफ़ या सई के दरमियान कोई भी किसी तरीके से भी ज़हर बुझी खंजर भोक दे जैसे ही हुसैन को यह खबर मिली आपने फ़ौरन ही अपने अहलो अवाल को मक्का छोड़ने कि तैयारी करवाई जब कि हज को सिर्फ १ दिन रह गया था। आपने अपने हज को उमरा में तब्दील कर लिया क्युकी हज़रत हुसैन नहीं चाहते थे के खाना-ए-काबा कि बे हुरमती हो क्युकी इस जगह पर जंग करना और खून गिराना हराम है। नमाज़े मगरिब अदा करके आप कूच कर जाते है। आपके जाने के दुसरे दिन मक्के के गवर्नर उमर बिन सईद को खबर लगी तो वह घबरा गया क्युकी उसको हुक्म था यज़ीद का कि हुसैन को यहीं पर क़त्ल कर दो आनन फानन में सईद ने ५०० का लश्कर भेजा लेकिन यह लश्कर हार कर के वापस मक्का लौट गया और **१३ जिलहिज्ज ६० हिजरी** को हज़रत हुसैन **तमीम** नाम कि जगह पहुँच गए. इस तरहा हुसैन से मक्का

भी छूट गया तमीम से सफ़र तय करते हुए आप सलाविया के मुकाम पे पहुँच जाते है कुछ वक़त रहने के बाद आप **जबाला** कि तरफ रुख करते हैं और **२२ जिलहिज ६० हिजरी** तक आप वहीं पर थे लेकिन हाय अफ़सोस इतना बड़ा काफिला ;यहाँ तक पहुँचते-पहुँचते आधा रेह गया था लग तो ऐसे रहा था कि जैसे हुसैन मौत कि तरफ बढ़ रहे हो यहाँ से चलकर आप **बतने अकीक** के मुकाम पर पहुँचते है और यहाँ से बढ़कर आपका काफिला **दमिश्क** कि तरफ बढ़ गया और इसी के सेहरा में आपने १ मुहर्रम का चाँद देखा उसके बाद आप शराफ के मुकाम पर पहुंचे यानि एक मुहर्रम को आप इसी जगह खेमा ज़न हुए क्युकी यह जगह हर लिहाज़ से बेहतर थी आपके भाई जनाबे अब्बास ने पानी इकट्ठा किया, खेमे लगाए और इतना पानी इकट्ठा कर लिया कि ताकि अगर कोई काफिला आए तो वह भी पानी पी सके। इस जगाह पर काफी गरमी थी। अभी चैन के २ पल भी नहीं गुजरे थे कि एक लश्कर जिसकी सिपेसलारी **हूर बिन यज़ीद** कर रहा था आपके करीब आता है तो आप पूछते हैं तुम कौन हो ? और यहाँ क्यों आए हो ? जवाब मिला के मैं हूर हूँ। आपने उन सभी को पानी पिलाया कुछ बातचीत हुई तभी वक़्त-ए-ज़ोहर हो गया नमाज़ साथ में पढ़ी, बाद नमाज़ हज़रत हुसैन ने एक ख़ुत्बा दिया "तुमने हमे ख़त लिख कर बुलाया है हम अपनी मरज़ी से नहीं आए हैं अगर तुम चाहते हो तो मैं वापस चला जाता हूँ हूर ने कोई जवाब नहीं दिया कुछ घंटो बाद वक़्त-ए-असर हुआ फिर एक साथ नमाज़ अदा कि गई। हज़रत हुसैन ने फिर एक बार कहा मुझे ख़त लिख बुलाया गया है। अब हूर ने जवाब दिया मैं किसी ख़त के बारे में नहीं जानता यह सुन्ना था कि हुसैन ने अब्बास को हुक्म दिया कि ख़त पेश करो, अब्बास ने २ गट्ठर खतो के रख दिए, हूर ने कहा यह ख़त हमने नहीं लिखे हुसैन ने कहा ठीक है हम मदीने वापस चले जाते हैं हूर ने कहा आप मदीने नहीं जा सकते. हालात बिगड़े जंग कि नौबत आ गई लेकिन हुसैन ने मना किया, हुसैन ने अपना रुख दमिश्क कि तरफ कर लिया और

धीरे धीरे लश्कर मुकामी अजीब-हजा-नात से थोड़ा दूर तक पहुँच गए। हूर आपके साथ चल रहे हैं, हूर ने कहा हमे यज़ीद का हुक्म है कि मैं आपको कूफ़े ले आऊं. वक़्त काफी हो चूका था लिहाजा इसी मुकाम पर शब् गुजारी और सुभा फजर के बाद आगे बढना शुरू किया, हूर समझ नहीं पा रहा था क्या करूँ हुसैन आगे बढते जा रहे है, अचानक आपके घोड़े ने आगे बढना बंद कर दिया हुसैन ने लाख कोशिश करी लेकिन सफ़र आगे नहीं बढ सका तब हुसैन ने मुकामी लोगो से मालूम किया तो लोगो ने कहा कि यह कर्बला का मुकाम है कर्बला का नाम सुनते ही हुसैन खामोश हो गए, आपने जगह का मुआइना किया और कहा यहाँ पास में नहरे फ़ुरात जिससे कि पानी आसानी से मिल जाएगा। हूर ने कहा आपके खेमे यहाँ नहीं गढ़ सकते, अब्बास को गुस्सा आया और तलवारे तान दी लेकिन हुसैन ने आपको मना किया क्युकी हुसैन जानते थे के उनका मकसद नाना को दिया वादा पूर करना है किसी तरहा कि जंग नहीं, हुसैन ने अपने खेमे ३ मील दूर गाढ़ दिए हूर ने इसकी खबर अब्दुल्लाह इब्ने ज़ियाद को भेज दी के हमने हुसैन को घेर लिया है, हुसैन ने इस जगह को उसके मालिक से ६०००० दिरहम में कुछ शर्तो के साथ खरीद लिया अब यहाँ पर जिन जिन लोगो को हुसैन के बारे में खबर मिली तो वह हुसैन से मिलने आने लगे हज़रत हुसैन ने अपने दोस्त अब्दुल्लाह इब्ने मज़ाहिर को ख़त के ज़रिये बुलाया और जैसे ही आपको ख़त मिला अप फ़ौरन हुसैन के खेमे में आ गए मज़ाहिर से मिलने के बाद हुसैनी खेमो में ख़ुशी कि लहर दौड़ गई इसके अलावा दुसरे और आशिके हुसैन हुसैनी खेमे में जुड़ने लगे जैसे के कनाना इब्ने अतीक, अलतबलगी, उमर इब्ने सबीहा, अलसबी और जरगाम इब्ने मालिक-ए-अश्तर यह दोनों ही अल्वी शिया थे.

५ मुहर्रम तक तो सब कुछ ठीक ठाक रहा लेकिन अचानक ही यज़ीद का यह फरमान आ गया कि हुसैनियो पर पानी बंद कर दिया जाए, नहरे फ़ुरात पर पहरे लगा दो किसी भी हाल में एक कतरा

भी पानी ना पहुँच पाए. हिफाजत के तौर पर ५०० का लश्कर नहरे फ़ुरात और खेमो के बीच में तैनात कर दिया जाए, जंग कि कमान उमर इब्ने साद के हाथ में थी जिसको यह इनाम था कि क़त्ल-ए-हुसैन के बाद **हुकूमत-ए-रे** कि बाग-डोर उसके हाथ लग जाएगी लेकिन इन तमाम तैयारियो के बावजूद भी अब्दुल्लाह इब्ने ज़ियाद मुतमईन नहीं था, इस लिए उसने तकरीबन ५०००० के ऊपर फौजो को तैनात कर दिया ऐसे लग रहा था जैसे हुसैनी फौजो कि तादाद हजारो में है, हुसैन ने उमरे साद से एक गुफ्तगू कि और अपनी पूरी बात रखी के हुसैन और उनके साथी यहाँ जंग करने खुद नहीं आये हैं बल्कि उन्हें बुलाया गया है अगर यज़ीद चाहता है कि जंग ना हो तो हम वापस मदीने चले जाएंगे, उमरे साद यह सुनकर बड़ा खुश हुआ और उसने यह पैगाम इब्ने ज़ियाद तक पहुंचा दिया क्युकी उमरे साद खुद नहीं चाहता था कि उसकी हुसैन से जंग हो और वह हुसैन का कातिल कहलाए, आज का दिन उमरे साद के लिए बड़ी ख़ुशी का दिन था के चलो इसी तरहा जंग टल जाएगी लेकिन अगले ही दिन कासिद के ज़रिए इब्ने ज़ियाद का ख़त मिला जो इस तरहा था "बेवकूफी मत करो हुसैन हमारी चाल में फस चुके है इस लिए वह अपनी जान बचाने के लिए ऐसी बातें कर रहे है अगर वह जंग नहीं चाहते हैं तो यज़ीद कि बैत कर लें"। उमरे साद यह ख़त पढ़कर परेशान हो गया क्युकी वह जानता था हुसैन बैत करने वाले नहीं है अगर उन्हें बैत ही करनी होती तो मदीना क्यों छोड़ते। फिर भी उसने हुसैन के सामने बैत कि बात रखी जिसे हुसैन ने ठुकरा दिया और यह कहा इस्लाम से ऊपर कुछ भी नहीं है इस्लाम पर सब कुछ कुर्बान है, हुसैन का यह कड़ा रुख देख कर उमरे साद हैबत में आ गया उसको लगने लगा कि ना चाहते हुए मुझे कत्ले हुसैन में शरीक होना पडेगा।

खेमो के अंदर मौजूद पानी ख़त्म हो चुका है बच्चे प्यास से तड़प रहे हैं, लेकिन इनकी प्यास बुझाने का अब कोई रास्ता नहीं. हज़रत अब्बास बहुत गुस्से में और सोच रहे हैं कि हम लोग जान बूझकर दुश्मन को मौक़ा दे रहे हैं, अब्बास को एक ही फ़िक्र है के किस तरहा जंग को जीता जाए और जान-ए-हुसैन बचाई जाए क्युकी उनकी नज़रो में यह एक जंग ही तो है। मुहर्रम कि ६ आते आते कतरा बराबर भी पानी खेमो में मौजूद नहीं था, यानि पानी पूरी तरहा से ख़त्म हो चूका था, बच्चो कि सदा-ए-अलातश फ़िज़ाओ में गूंज रही थी हुसैनी लश्कर तैयार है यज़ीदी फौजें चौकन्ना, उमरे साद को यह बात बखूबी मालूम है कि हज़रत हुसैन के लश्कर को प्यासा रखना ना मुमकिन है उसने इब्ने ज़ियाद के हुक्म के मुताबिक नहरे फ़ुरात पर पहरा तो बिठा दिया है लेकिन अभी मुतमईन नहीं हुआ, हज़रत हुसैनी लश्कर के ३० जवान दोपहर तक नहरे फ़ुरात तक पहुँच चुके हैं और ५ मशक पानी भरकर खेमो में ले आये बिना जान गवाए। यह खबर खुली बिन यज़ीद ने एक ख़त के ज़रिए इब्ने ज़ियाद को भेज दी और ख़त में यह लिखा "उमरे साद हज़रत हुसैन पर कुछ ज़यादा ही मेहरबान हो रहा है उसकी ढील कि वजाह से हुसैन के चन्द सिपाही बिना जान गवाए पानी ले जाने में कामियाब हो गए और अगर ऐसा ही चलता रहा यक़ीनन हुसैन तेरे चुंगल से निकल कर कहीं और चले जाएंगे अगर तुम उमरे साद कि सरदारी और रे कि हुकूमत का फरमान मेरे हवाले कर दो तो यक़ीनन मैं क़त्ल-ए-हुसैन बेहतरीन तरीके से अंजाम दूंगा, ऐ अमीर मैं नहरे फ़ुरात का पानी कुत्तो, सुअरो, जंगली जानवरो के लिए हलाल कर दूंगा और आल-ए-नबी के लिए हराम"।

यह ख़त पढ़ते ही इब्ने ज़ियाद गुस्से में भर गया और उसने फ़ौरन ही उमरे साद को ख़त लिखा "ऐ उमरे साद तुम्हारी हर खबर मुझे हर सुबहा और हर शाम पहुंच रही है रात के अंधेरे में तुम जो हुसैन के साथ तन्हाई में मसनद बिछाकर गुफ्तगू करते हो उसको फ़ौरन बंद करदो हुसैन जैसे चालाक

तुम्हारे हाथो से निकल जाएंगे तुम अगर जंग के अंजाम से डरते हो तो मैं लाखो फौजे तुम्हारे पास भेज दूंगा और तुमने हमसे कोई गद्दारी कि तो नतीजा तुम जानते हो, हुसैन के ऊपर पानीके एक-एक कतरा हराम कर दो" ।

ख़त मिलते ही उमरे साद ने हुसैनी खेमो और नहरे फ़ुरात के बीच २०००० का लश्कर तैनात कर दिया इतनी फ़ौज देखकर हुसैनी लश्कर में बेचैनी बढ गई, हुसैन समझ गए कि अब पानी लाना मुमकिन नहीं है इस लिए उन्होंने हज़रत अब्बास से कहा कि अब पानी लेन का मतलब है जंग.

७ मुहर्रम पहुंचते-पहुंचते कर्बला कि ज़मीन पे ६०००० से ज़यादा का लश्कर हुसैनी खेमो को घेर चूका है, जब हज़रत अब्बास को यह यकीन हो गया कि अब पानी खेमो तक आना नामुमकिन है तो आपने ७ मुहर्रम को हज़रत हुसैन से जंग करने कि इज़ाज़त मांगी लेकिन आपने मना फरमा दिया क्युकी हज़रत हुसैन का मकसद पूरे इस्लाम के लिए कुर्बानी देना था ना कि जंग करना। इसलिए आप अपना हर कदम खुदा कि मर्ज़ी से उठा रहे है और दुश्मन यह समझ रहे हैं कि मैं अपनी चाल में कामयाब हो रहा हूं और हुसैन मुस्कुरा रहे हैं कि मैंने तनहा ही पूरी साज़िश का खात्मा कर दिया।

हज़रत अब्बास ने कहा कि हमने नहरे फ़ुरात से पानी लाने पर पाबन्दी है तो कोई बात नहीं आपने फैसला किया कि हम कुआ खोदेंगे और आपने अपना काम शुरू कर दिया ७० हाथ खोदने के बावजूद पानि नसीब नहीं हुआ तभी इसकी खबर उमरे साद को लग गई तो उसने कुआ खोदने पर पाबन्दी लगा दी और फौजो को खेमो के करीब कर लिया ताकि निग़रानी कर सके।

आखरी ३ दिन हुसैनी पर बहुत भारी पड़े क्युकी ना तो खाने के लिए रिज़क और पिने के लिए पानी नदारद रहा, हज़रत हुसैन अपने अहले खानदान और तमाम अंसार को समझाते रहे और सब्र

रखने को कहते रहे और जब ९ मुहर्रम कि शब् लगी तो आपने उमरे साद को बुलाया और कहा कि हम एक दिन कि और मोहलत चाहते हैं यानि हम जंग १० मुहर्रम से करेंगे, यह सुनकर उमरे साद खुश हो के शायद हुसैन एक दिन का वक़त मांग रहे हैं के अपने साथियो से राय मशवरा कर के जंग को टाल सके और यज़ीद से बैत कर ले जैसे कि उमरे साद चाहता था लेकिन हुसैन का यह फैसला अल्लाह कि मरज़ी पर था, जंग को टालना नहीं था क्युकी आपको नानाजान ने १० मुहर्रम का ही वक़त कहा था और आपको यह मालूम था ज़्यादा तर अल्लाह वाले इसी दिन कामयाब हुए है चाहे वह हज़रत आदम (अलैहे सलाम) हो, हज़रत नूह (अलैहे सलाम), हज़रत इब्राहिम (अलैहे सलाम), हज़रत मूसा (अलैहे सलाम) वगैराह-वगैराह इसी दिन कामयाब हुए है. हज़रत हुसैन को अगर फिकर थी तो यह थी कि उनका फैसला कहीं अंसारों या बनी कमर को मंज़ूर होगा या नहीं क्युकी दुश्मनी तो सिर्फ हुसैन से है सभी **१९२** से नहीं. इस लिए हुसैन अपने हर फैसले को सोच समझ कर ही करना चाहते थे. हुसैन यह जानते थे जंग करने का मतलब सिर्फ मौत है फ़तेह नहीं लेकिन इसके बावजूद आप अपने इरादे अपने खानदान वालो पर और अंसारों पर ज़ाहिर करना नहीं चाहते थे वक़्त गुजरता गया काली रात सुबहा के सूरज के निकलते ही ख़त्म हो गई आप एक पल भी नींद कि आगोश में नहीं गए और **९ मुहर्रम** का सूरज नमूदार हुआ बच्चो कि अलाताश कि आवाज़ें आपके कानो में गूँजति रही लेकिन हाय अफ़सोस चाह कर भी कुछ नहीं कर सके सिवाए तसल्ली देने के और आहिस्ता-आहिस्ता ९ मुहर्रम का सूरज डूब गया. इसके साथ ही **१० मुहर्रम** कि शब कर्बला के रेगिस्तान में छा-गई। मैं तो यह कहूंगा कि यह रात नहीं यह तो मौत कि चादर है जो कि सुबहा होते ही पूरी हो जाएगी लेकिन हुसैन एक जांबाज़ कि तरहा कल कि होने वली जंग कि तैयारी में जुट गए आप बारी-बारी से कभी बनि कमर, कभी बनि हाशिम और कभी अंसारों से मुलाकात करते और समझाते हैं। इसके बावजूद

भी आप मुतमईन नहीं थे इसलिए आपने १० मुहर्रम कि शब में सब लोगो को इकट्ठा किया और जब आपने देखा कि हर फर्द या शख्स उनके सामने बैठ चूका है तो आपने एक ख़ुत्बा दिया।

"अस सलाम अलैकुम जैसे कि आप जानते है के यज़ीद कि दुश्मनी सिर्फ हुसैन से है इसके अलावा किसी से नहीं मुझे मेरे नाना जान का दीन बचाना है यह आप सब जानते हैं के हुसैन यज़ीद से बैत नहीं कर सकते १०० साल कि ज़िन्दगी से बेहतर एक दिन कि मौत भली है इस्लाम पर मैं अपना सब कुछ कुर्बान करता हूँ अपने बेटे, अपने, भाई और दूसरे लोग और हम यह भी जानते है कि हमारे अलावा आप सब कि जान बच सकती है। लिहाजा अगर आप सब चाहे तो मुझे छोड़ कर जा सकते है रही बात जन्नत कि तो आपको मिलेगी"।

ख़ुत्बा पढ़ने के बाद हज़रत हुसैन ने रौशन मशाल को बुझा दिया तक़रीबन १०-१५ पल बाद आपने दुबारा मशाल को रौशन कर दिया और अपनी निगाहें दौड़ाई तो आपने पाया कि जो जहां जिस हाल में बैठा था वैसा ही बैठा रहा। अंसारों ने कहा कि क्या आप यह कहना चाहते हैं के हम लोग आपका साथ जन्नत कि लालच में दे रहे हैं। तो ऐसा हरगिज़ नहीं हम हक़ का साथ दे रहे हैं, वरना रोज़े-मेहशर के दिन हम नबी-ए-करीम (सल्लला हु अलैहे वसल्लम) को क्या मुह दिखाएंगे। बस इतनी सी बात है यह सुनने के बाद हज़रत हुसैन के होटों पर कुछ मुस्कुराहट झलकी और आप कहने लगे हमे आपकी वफादारी पर पूरा भरोसा है और हम जानते है कि आप सभी हज़रत जांबाज़ी का मुझाइरा करेंगे हक़ पर चलने वाले मौत से डरा नहीं करते।

१० मुहर्रम कि पूरी शब जागते हुए गुजर गई वक़्त-ए-फजर आ गया आपने अपने बेटे अली अकबर को अजान देने को कहा बाद नमाज़-ए-फज़र सूरज के नमूदार होते ही जंग का आग़ाज़ हुआ और एक एक करके हुसैनी खेमे के सभी हज़रत शहीद होते गए सबसे आखिर में हज़रत हुसैन (अलैहे सलाम) ने जंग कि और वक़त-ए-असर आते आते आप भी शहीद हो गए, आपके शहीद होने के बावजूद इस्लाम कि नाव आगे बढती रही जो आज तक रवां है अल्लाह हम सब को नाविक-ए-इस्लाम का हिस्सा बनाए आमीन.....सुम्मा अमीम।

लेखक

हज़रत नुसरत आलम शेख़ (जाफ़र)